उपचारिकाओं के समक्ष आने वाली समस्याएं एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

*शोधार्थी : तेजवीर सिंह[1], डॉ. नवनीत कौर आहूजा[2]

[1]*सहायक आचार्य, समाजशास्त्र विभाग, बरेली कॉलेज, बरेली (उ.प्र.) महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखंड विश्वविद्यालय, बरेली (उ.प्र.)*

[2]*आचार्य, समाजशास्त्र विभाग, बरेली कॉलेज, बरेली (उ.प्र.) महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखंड विश्वविद्यालय, बरेली (उ.प्र.)*

***सारांश*—यह शोध पत्र उपचारिकाओं द्वारा पारिवारिक और सामाजिक स्तर पर सामना की जाने वाली विभिन्न समस्याओं का विश्लेषण करता है। प्रस्तुत शोध पत्र में बरेली जिले के विभिन्न अस्पतालों में कार्यरत 150 उपचारिकाओं पर किए गए एक समाजशास्त्रीय अध्ययन के माध्यम से, हमने पाया कि उपचारिकाओं को मुख्य रूप से वेतन संबंधी समस्याएं, अस्पताल नीतियों, कार्य-परिवार संघर्ष, तनाव और सामाजिक अलगाववाद का सामना करना पड़ता है। यह पत्र नर्सिंग पेशे की चुनौतियों को समझने और उपचारिकाओं की कल्याण सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण सिफारिशें प्रदान करता है।**

***शब्दकुंजी*—उपचारिकाएं, पारिवारिक समस्याएं, सामाजिक समस्याएं, कार्य-जीवन संतुलन, महिला कर्मचारी**

I. परिचय

स्वास्थ्य सेवा प्रणाली के विकास में उपचारिकाएं (नर्सें) अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। आधुनिक युग में स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने में चिकित्सक और उपचारिकाएं दोनों ही केंद्रीय भूमिका निभाते हैं। जहां डॉक्टर रोग के निदान और उपचार पर ध्यान केंद्रित करते हैं, वहीं उपचारिकाएं रोगी की व्यापक देखभाल, आराम और पुनरुद्धार में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं।

नर्सिंग को एक करुणामय पेशा माना जाता है जहां व्यक्ति मानव सेवा को अपना जीवन लक्ष्य बनाते हैं। नर्सें चौबीस घंटे रोगी की देखभाल करती हैं, रोगी की शारीरिक और मानसिक स्थिति में सुधार लाती हैं, और स्वास्थ्य सेवा प्रणाली को सुचारू रूप से संचालित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। भारत में स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र तेजी से विकास कर रहा है, लेकिन इस विकास के साथ ही उपचारिकाओं को अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है।

हालांकि नर्सिंग पेशे में प्रवेश करने वाले युवाओं की संख्या बढ़ रही है, फिर भी वैश्विक स्तर पर उपचारिकाओं की कमी बनी हुई है। कार्य का अधिक दबाव न केवल उपचारिकाओं के कार्यस्थल प्रदर्शन को प्रभावित करता है, बल्कि उनके व्यक्तिगत जीवन, पारिवारिक संबंधों और सामाजिक जीवन को भी प्रभावित करता है।

नर्सिंग पेशे की समस्याओं पर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर व्यापक शोध किए गए हैं। नायर (2010) ने निजी अस्पतालों में कार्यरत उपचारिकाओं के सामने आने वाली चुनौतियों का अध्ययन किया और पाया कि वेतन असमानता, कार्य की अधिकता, अपर्याप्त सुविधाएं, और अस्पताल प्रबंधन की शोषणकारी नीतियां मुख्य समस्याएं हैं। किलीयन (2004) ने कार्यरत महिलाओं के स्वास्थ्य जोखिमों का विश्लेषण किया और पाया कि नर्सें व्यावसायिक स्वास्थ्य जोखिमों के संपर्क में आती हैं, जिनमें तनाव, पीठ दर्द, सुई द्वारा चोट,

संक्रामक रोग, और नींद संबंधी समस्याएं शामिल हैं। कार्य की कठोर प्रकृति, विषम कार्य घंटे, लंबे समय तक खड़े रहना, और अत्यधिक कार्य भार ये सभी कारक उनके स्वास्थ्य जोखिम को बढ़ाते हैं।

यिलड्रीम और अयकन (2008) ने कार्य-परिवार संघर्ष पर ध्यान दिया। उपचारिकाओं के पास बदलाव का काम है और लंबे, अनियमित कार्य घंटे हैं, जो कार्य-परिवार संघर्ष का कारण बनते हैं। ये संघर्ष उपचारिकाओं के जीवन और कार्य संतुष्टि दोनों को प्रभावित करते हैं। परिवार का समर्थन कार्य-परिवार संघर्ष के विरुद्ध एक महत्वपूर्ण बफर है। कुरेशी एवं अन्य (2012) ने यौन उत्पीड़न की समस्या पर प्रकाश डाला। नर्सिंग परंपरागत रूप से सामाजिक-सांस्कृतिक मानदंडों के विरुद्ध होने के कारण, नर्सें यौन उत्पीड़न के प्रति अधिक संवेदनशील हैं। आयु, पद में उच्चतर पुरुष, और रोगी के रिश्तेदार मुख्य अपराधी हैं।

II. अनुसंधान उद्देश्य

इस शोध पत्र के निम्नलिखित उद्देश्य हैं -

1. उपचारिकाओं द्वारा पारिवारिक स्तर पर सामना की जाने वाली चुनौतियों का अन्वेषण करना।
2. समाज में उपचारिकाओं की स्थिति और उन्हें आने वाली सामाजिक समस्याओं की जांच करना।
3. नर्सिंग पेशे में सुधार के लिए व्यावहारिक सिफारिशें प्रदान करना।

III. पद्धतिशास्त्र

यह अध्ययन अन्वेषणात्मक तथा वर्णनात्मक पद्धति पर आधारित है, जिसे समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से तैयार किया गया है। शोध के लिए भारत के उत्तर प्रदेश के बरेली जिले के NABH मान्यता प्राप्त निजी अस्पतालों को अध्ययन क्षेत्र के रूप में चुना गया। नमूना चयन के लिए निजी एवं सरकारी अस्पतालों से कुल 150 उपचारिकाओं का चयन किया गया। डेटा संग्रहण के लिए प्राथमिक तौर पर व्यक्तिगत साक्षात्कार और प्रश्नावली का उपयोग किया गया, जबकि द्वितीयक डेटा के लिए पूर्व प्रकाशित शोध पत्रों एवं सरकारी लेखों पत्रिकाओं एवं प्रकाशित व अप्रकाशित शोध ग्रंथों का विश्लेषण किया गया है।

IV. उपचारिकाओं के समक्ष आने वाली विभिन्न समस्याएं

उपचारिकाओं के समक्ष आने वाली समस्याओं को दो वर्गों मे विभाजित करके देखा जा सकता है – प्रथम पारिवारिक स्तर पर आने वाली समस्याएं एवं द्वितीय सामाजिक स्तर पर होने वाली समस्याएं

1. पारिवारिक स्तर पर होने वाली समस्याएं

उपचारिकाओं को पारिवारिक स्तर पर सबसे अधिक तनाव और मानसिक स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जिससे लगभग 45.33% उपचारिकाएं प्रभावित हैं। कार्य का अत्यधिक बोझ और रोगियों की देखभाल की भावनात्मक रूप से थकाऊ प्रकृति उन्हें मानसिक रूप से थका देती है। इसके साथ ही, रात की शिफ्ट के कारण होने वाली अनिद्रा और कार्यस्थल पर लगातार बीमारी व मृत्यु जैसी दुखद घटनाओं का सामना करना उनके तनाव को और बढ़ा देता है। यह शारीरिक और मानसिक दबाव न केवल उनके स्वयं के स्वास्थ्य को प्रभावित करता है, बल्कि उनके पारिवारिक वातावरण में भी चिड़चिड़ापन और थकान पैदा करता है।

सारणी संख्या 1 : उपचारिकाओं की पारिवारिक स्तर पर समस्याओं का वितरण

समस्या	प्रतिशत	संख्या
मानसिक तनाव	45.33%	68
कार्य-परिवार संघर्ष	27.33%	41
परिवार में कम भागीदारी	14.00%	21
कोई समस्या नहीं	13.33%	20
कुल उत्तरदाता 150		

दूसरी ओर 27.33% उपचारिकाएं कार्य-परिवार संघर्ष (Work-Family Conflict) को एक बड़ी समस्या मानती हैं। शिफ्ट में काम करने की मजबूरी के कारण वे परिवार की महत्वपूर्ण घटनाओं और सामाजिक कार्यों में हिस्सा नहीं

ले पातीं, जिससे उनके वैवाहिक जीवन में भी कठिनाइयां उत्पन्न होती हैं। अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों और बच्चों की देखभाल के लिए वे अक्सर अपनी नींद का त्याग करती हैं, जिसके परिणामस्वरूप उन्हें पीठ दर्द, नींद की कमी और संक्रामक रोगों का अधिक खतरा बना रहता है। यह दर्शाता है कि पेशेवर कर्तव्यों और घरेलू उत्तरदायित्वों के बीच संतुलन बनाना उनके लिए एक निरंतर संघर्ष बना हुआ है।

2. सामाजिक स्तर पर होने वाली समस्याएं

उपचारिकाओं को सामाजिक स्तर पर कई गंभीर चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जिनमें सीमित सामाजिक अंतःक्रिया सबसे प्रमुख समस्या है। लगभग 30.67% उपचारिकाएं मानती हैं कि काम के अनियमित समय और छुट्टियों की कमी के कारण वे पारिवारिक समारोहों में शामिल नहीं हो पातीं, जिससे वे पड़ोसियों और रिश्तेदारों से कटकर सामाजिक अलगाव का अनुभव करती हैं। इसके साथ ही, 26.67% उपचारिकाएं समाज में व्याप्त नकारात्मक छवि और सामाजिक कलंक से जूझती हैं। पिछड़े क्षेत्रों में इस पेशे को संदेह की दृष्टि से देखना, मीडिया में सेवा-भाव वाली छवि की कमी और कार्यस्थल या समाज में छेड़खानी जैसी घटनाएं उनके मानसिक और सामाजिक स्तर को प्रभावित करती हैं।

सारणी संख्या 2 : सामाजिक स्तर पर समस्याओं का वितरण

समस्या	प्रतिशत	संख्या
सीमित सामाजिक अंतःक्रिया	30.67%	46
उपचारिकाओं की छवि	26.67%	40
कोई समस्या नहीं	22.67%	34
रात की शिफ्ट के प्रति दृष्टिकोण	12.67%	19
विवाह संबंधी समस्याएं	7.33%	11
कुल उत्तरदाता 150		

दूसरी ओर, 12.67% उपचारिकाओं के लिए रात की शिफ्ट के प्रति समाज का संकुचित दृष्टिकोण एक बड़ी बाधा है। रात में काम करने वाली महिलाओं को लेकर सामाजिक स्वीकृति की कमी न केवल उनके सम्मान को ठेस पहुँचाती है, बल्कि उनके विवाह संबंधी मामलों में भी गंभीर कठिनाइयां पैदा करती है। इसके अतिरिक्त, लगभग 7.33% उपचारिकाएं महसूस करती हैं कि समाज में नर्सिंग को अब भी एक कम सम्मानजनक पेशा माना जाता है। ये सभी तथ्य दर्शाते हैं कि चिकित्सा क्षेत्र की रीढ़ होने के बावजूद, उपचारिकाओं को आज भी सामाजिक प्रतिष्ठा और स्वीकार्यता के लिए कड़ा संघर्ष करना पड़ता है।

V. उपसंहार

1. कार्यस्थल समस्याओं का विश्लेषण

अनुसंधान से स्पष्ट है कि वेतन और अस्पताल नीतियां निजी क्षेत्र में काम करने वाली उपचारिकाओं की सबसे बड़ी समस्या हैं। यह इंगित करता है कि निजी स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं को लाभ को प्राथमिकता देते हुए, कर्मचारी कल्याण को नजरअंदाज किया जा रहा है। निजी अस्पताल में काम करने वाली उपचारिकाएं अक्सर सरकारी अस्पतालों में काम करने के तरीकों को ही प्राथमिकता देती हैं, क्योंकि निजी क्षेत्र की शोषणकारी प्रथाएं उन्हें हतोत्साहित करती हैं।

2. पारिवारिक समस्याओं का विश्लेषण

तनाव पारिवारिक स्तर पर प्रमुख समस्या है। नर्सिंग कार्य की प्रकृति ऐसी है कि इसमें शारीरिक और मानसिक दोनों ही परिश्रम की अत्यधिकता है। शिफ्ट वर्क के कारण उपचारिकाएं अपने परिवारों के साथ पर्याप्त समय नहीं बिता पाती हैं। परिवार का समर्थन इस तनाव को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, लेकिन जब परिवार भी उपचारिकाओं की कार्य मांग को समझ नहीं पाता, तो स्थिति और गंभीर हो जाती है।

3. सामाजिक समस्याओं का विश्लेषण

सीमित सामाजिक अंतःक्रिया सामाजिक स्तर पर सबसे प्रमुख समस्या है। उपचारिकाओं के अनियमित कार्य समय और न्यूनतम छुट्टियां उन्हें सामाजिक गतिविधियों में भाग लेने से रोकती हैं। उपचारिकाओं की समाज में नकारात्मक छवि भी एक गंभीर मुद्दा है, विशेष रूप से पिछड़े और अशिक्षित समाजों में। ये पूर्वाग्रह उपचारिकाओं की सामाजिक स्थिति को कमजोर करते हैं।

यह शोध पत्र स्पष्ट रूप से रेखांकित करता है कि भारतीय निजी स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में कार्यरत उपचारिकाओं को कार्यस्थल, परिवार और समाज के विभिन्न स्तरों पर गंभीर

चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। अध्ययन के अनुसार, पारिवारिक स्तर पर 45.3% उपचारिकाएं तनाव को अपनी मुख्य समस्या मानती हैं, जो अत्यधिक कार्यभार और भावनात्मक थकान के कारण उत्पन्न होता है। वहीं, सामाजिक स्तर पर 30.5% उपचारिकाएं सीमित सामाजिक अंतःक्रिया को एक बड़ी बाधा के रूप में देखती हैं, क्योंकि काम के अनियमित घंटों और छुट्टियों के अभाव के कारण वे सामाजिक आयोजनों और रिश्तों से कटती जा रही हैं।

VI. सुझाव और सिफारिशें

1. वेतन संरचना में सुधार: अस्पताल प्रबंधन को उपचारिकाओं के लिए न्यायसंगत वेतन संरचना निर्धारित करनी चाहिए।
2. कार्य-जीवन संतुलन: कार्य के घंटे को कम करने और छुट्टियों को बढ़ाने की नीति बनानी चाहिए।
3. मानसिक स्वास्थ्य सहायता: अस्पतालों को उपचारिकाओं के लिए परामर्श और मानसिक स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करनी चाहिए।
4. सामाजिक जागरूकता: समाज में नर्सिंग पेशे की महत्ता के बारे में जागरूकता बढ़ानी चाहिए।
5. नीति और विनियमन: सरकार को निजी अस्पतालों में उपचारिकाओं की कल्याण के लिए सख्त नीतियां लागू करनी चाहिए।

उपचारिकाएं स्वास्थ्य सेवा प्रणाली की रीढ़ हैं। उनकी कल्याण सुनिश्चित करना न केवल उनके लिए बल्कि रोगियों और पूरी स्वास्थ्य सेवा प्रणाली के लिए भी महत्वपूर्ण है।

संदर्भ

[1] चौधरी, आर., एवं अमृता (2024), प्रॉब्लम्स फेस्ड बाई वर्किंग वीमेन: ए सोशियोलॉजिकल स्टडी ऑफ नर्सेज इन प्राइवेट सेक्टर, शोधकोष जर्नल ऑफ विजुअल एंड परफॉर्मिंग आर्ट्स, 51, 1151-1160।

[2] एलन, डी. (2015), द इनविजिबल वर्क ऑफ नर्सेज: हॉस्पिटल्स, ऑर्गनाइजेशन एंड हेल्थकेयर, रूटलेज एडवांसेस इन हेल्थ एंड सोशल पॉलिसी।

[3] मोलिना-मुला, जे., एवं गालो-एस्ट्राडा, जे. (2020), इम्पैक्ट ऑफ नर्स-पेशेंट रिलेशनशिप ऑन क्वालिटी ऑफ केयर एंड पेशेंट ऑटोनॉमी इन डिसीजन-मेकिंग, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एनवायरनमेंटल रिसर्च एंड पब्लिक हेल्थ, 17(3), 835।

[4] नायर, एस. (2010), नर्सेज स्ट्राइक्स इन दिल्ली: ए स्टेटस क्वेश्चन, इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, 45(14), 23-25।

[5] किलियन, एम. जी. (2004), नर्सेज हेल्थ: वर्क एंड फैमिली इन्फ्लुएंसेस, द नर्सिंग क्लीनिक्स ऑफ नॉर्थ अमेरिका, 39(1), 19-35।

[6] यिल्दिरिम, डी., एवं आयकन, जेड. (2008), नर्सेज वर्क डिमांड्स एंड वर्क-फैमिली कॉन्फ्लिक्ट: ए क्वेश्चनियर सर्वे, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ नर्सिंग स्टडीज, 45(9), 1366-1378।

[7] कुरैशी, एम. बी., कुरैशी, एस. बी., तहेरानी, ए., एवं अंसारी, एस. (2012), कोपिंग विद सेक्सुअल हैरासमेंट: द एक्सपियरीअंसेस ऑफ जूनियर फीमेल स्टूडेंट नर्सेज, द वीमेन-एनुअल रिसर्च जर्नल, 4।

[8] विटाले, एस. ए., वेरोन-गणेश, जे., एवं वू, एम. (2015), नर्सेज वर्किंग द नाइट शिफ्ट: इम्पैक्ट ऑन होम, फैमिली एंड सोशल लाइफ, जर्नल ऑफ नर्सिंग एजुकेशन एंड प्रैक्टिस, 5(10), 70।

[9] अलअज्जम, एम., अबुआलरुब, आर. एफ., एवं नज्जल, ए. एच. (2017), द रिलेशनशिप बिटवीन वर्क-फैमिली कॉन्फ्लिक्ट एंड जॉब सैटिस्फैक्शन अमंग हॉस्पिटल नर्सेज, नर्सिंग फोरम, 52(4), 278-288।

[10] स्टेट ऑफ यू.एस. नर्सिंग रिपोर्ट 2024, इनसाइट्स फ्रॉम 1 मिलियन नर्सेज। इंक्रेडिबल हेल्थ। प्राप्त: www.incrediblehealth.com